इकाई : ८

प्रेस–संस्कृति एवं राष्ट्रवाद

आज के वर्तमान युग में हम प्रेस के बिना आधुनिक विश्व की कल्पना नहीं कर सकते हैं। यह हमारे जीवन के हर पहलू को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष, किसी–न–किसी रूप में प्रभावित कर रहा है। चाहे ज्ञान का क्षेत्र हो या सूचना का, मनोरंजन का हो या रोजगार का, इससे प्रत्यक्ष रूप से दुनिया संचालित हो रहा है। आज की दूनिया में छपाई के पूर्व की स्थिति की सिर्फ कल्पना ही की जा सकती है, जहाँ मनुष्य परिवर्तनकारी घटनाओं से तुरंत परिचित नहीं होता था और ज्ञान एवं सूचना के अभाव में मानव तार्किक एवं मानवीय प्रवृति के विकास से वंचित था।

चूँकि 'आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है' अत: सूचना की आवश्यकता ने आविष्कार हेतु ज्ञान जगत को प्रेरित किया। हाँलाकि यह अविष्कार कोई अचानक या एक दिन की घटना नहीं है बल्कि सदियों के अनवरत विकास क्रम की कहानी है जिसने पूरे विश्व की सोंच में क्रांतिकारी बदलाव लाकर रख दिया। छापाखाना के आविष्कार का महत्व इस भौतिक संसार में आग, पहिया और लिपि की तरह है जिसने अपनी उपस्थिति से पूरे विश्व की जीवन शैली को एक नया आयाम प्रदान किया।

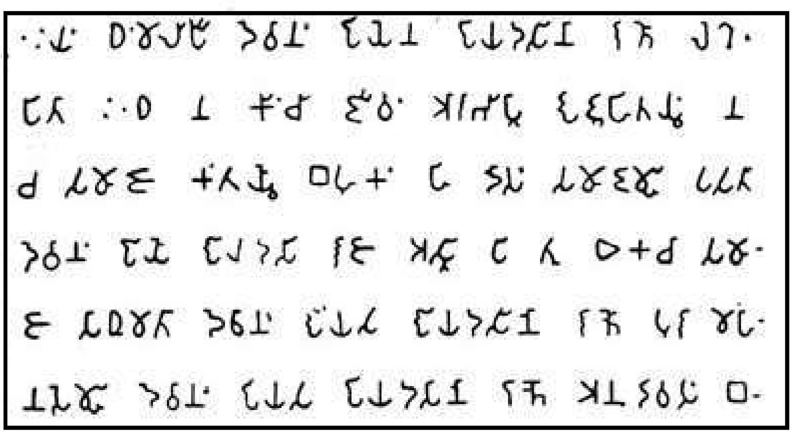

ब्राह्मी लिपि में अशोक का अभिलेख

मुद्रण का इतिहास गुटेनवर्ग तक :

मानव सभ्यता के आदिकाल में मनुष्य जो देखता था उसे अपनी स्वभाविक वुद्धि तथा अनुभव के अनुसार विभिन्न प्रकार से अंकित करने का प्रयास करता था। लेखन सामग्री के आविष्कार के पूर्व मानव चट्टानों तथा गुफाओं में अनुभवों एवं प्रसंगों की खुदाई करके चित्रित करता था तथा मिट्टी की टिकियों का उपयोग करता था। बाद में अपने ज्ञान को विभिन्न पत्रकों पर चित्रित करने लगा। 105 (A.D) ई० में टस्-प्लाई-लून (चीनी नागरिक) ने कपास एवं मलमल की पट्टियों से कागज बनाया। फलस्वरूप कागज, लेखन एवं चित्रांकन का एक साधन बन गया। मुद्रण की सबसे पहली तकनीक चीन, जापान और कोरिया में विकसित हुई। लगभग इसकी शुरूआत 594 ई० में लकड़ी के ब्लाक के माध्यम से की गई । 712 ई० तक यह चीन के सीमित क्षेत्रों में फैल गया। 760 ई० तक इसकी लोकप्रियता चीन और जापान में काफी बढ़ गई। ब्लाक प्रिंटिग का उपयोग अब पुस्तकों के पृष्ठ बनाने में होने लगा। दो छपे कागज के टुकड़ों को चिपकाकर एक पन्ना बनाया जाता था। लगभग 10वीं सदी के पूर्वार्द्ध तक ब्लाक प्रिंटिग की प्रक्रिया द्वारा मुद्रा पत्र भी छापे गए। इसी सदी के उतरार्ध में असामाजिक तत्वों द्वारा इसकी नकल की जाने लगी।

ब्लाक प्रिंटिंग-स्याही से लगे काठ के ब्लाक या तख्ती पर कागज को रखकर छपाई करने की विधि को ब्लाक प्रिंटिंग कहते हैं।

लकड़ी का ब्लाक

मुद्रण कला के आविष्कार और विकास का श्रेय चीन को जाता है। 1041 ई० में एक चीनी व्यक्ति पि-शेंग ने मिट्टी के मुद्र बनाए। इन अक्षर मुद्रों का संयोजन कर छाप लिया जा सकता था। बार-बार अलग करके इन्हें संयोजित भी किया जा सकता था। इस पद्धति ने ब्लाक प्रिंटिग का स्थान ले लिया। कोरियन लोगों ने कुछ समय पश्चात लकड़ी एवं धातु पर खोदकर टाइप बनाए। धातु के मूवेबुल टाइपों द्वारा प्रथम पुस्तक 13वीं सदी के पूर्वार्ध में मध्य कोरिया में छापी गई।

काफी दिनों तक मुद्रित सामग्री का सबसे बड़ा उत्पादक चीनी राजतंत्र था, क्योंकि इसे सिविल सेवा के आकांक्षी लोगों की जिज्ञासा को ध्यान मे रखते हुए बड़ी मात्रा में किताबें छपवानी पड़ती थी। 16 वीं सदी तक परीक्षा देने वालों की तादात बढ़ने से छपी किताबों की मात्रा में भी उसी अनुपात में वृद्धि हुई। 17 वीं सदी तक चीन में शहरी संस्कृति के फलने-फूलने से छपी हुई समग्रियों के उपभोक्ता अब विद्वान और अधिकारी ही नहीं रहे, बल्कि व्यापारी और अमीर महिलाओं के रूप में भी एक वर्ग सामने आया। 19 वीं सदी तक आते-आते मांग को पूरा करने हेतु शंधाई प्रिंट-संस्कृति का नया केन्द्र बन गया और हाथ की छपाई की जगह यांत्रिक छपाई ने ले ली।

यूरोप में आरंभ-गुटेन वर्ग की भूमिका :

यद्यपि मूवेबल टाइपों द्वारा मुद्रण कला का आविष्कार तो पूरब में ही हुआ परन्तु इसकला का विकास यूरोप में अधिक हुआ। इसका प्रमुख कारण था कि चीनी, जापानी और कोरियन भाषा में 40 हजार से अधिक वर्णाक्षर थे, फलतः सभी वर्णों का ब्लॉक बनाकर उपयोग करना कठिन कार्य था। लकड़ी के ब्लॉक द्वारा होने वाली मुद्रण कला समरकन्द-पर्शिया-सिरिया मार्ग से (रेशममार्ग) व्यापारियों द्वारा यूरोप, सर्वप्रथम रोम में प्रविष्ट हुई। 13वीं सदी के अंतिम में रोमन मिशनरी एवं मार्कोपोलो द्वारा ब्लाक प्रिंटिग के नमूने यूरोप पहुँचे। वहाँ इस कला का प्रयोग ताश खेलने एवं धार्मिक चित्र छापने के लिए किया गया। रोमन लिपि में अक्षरों की संख्या कम होने के कारण लकड़ी तथा धातु के बने मूवेबल टाइपों का प्रसार तेजी से हुआ। इसी बीच कागज बनाने की कला 11वीं सदीं में पूरब से यूरोप पहुँची तथा 1336 ई० में प्रथम पेपर मिल की स्थापना जर्मनी में हुई।इसी काल में शिक्षा के प्रसार, व्यापार एवं मिशनरियों की बढ़ती गतिविधियों से सस्ती मुद्रित सामग्रियों की मांग तेजी से बढ़ी। इस मांग की पूर्ति के लिए तेज और सस्ती मुद्रण तकनीक की आवयकता थी जिसे (1430 के दशक में) स्ट्रेसवर्ग के योहान गुटेन वर्ग ने अंततः कर दिखाया।

गुटेनवर्ग और प्रिंटिंग प्रेस :

जर्मनी के मेन्जनगर में गुटेनवर्ग ने कृषक-जमींदार-व्यापारी परिवार में जन्म लिया था। वह बचपन से ही तेल और जैतून पेरनेवाली मशीनों से परिचित था । गुटेनवर्ग ने अपने ज्ञान एवं अनुभव से टुकड़ों में विखरी मुद्रण कला के ऐतिहासिक शोध को संगठित एवं एकत्रित किया तथा टाइपों

के लिए पंच, मेट्रिक्स, मोल्ड आदि बनाने पर योजनाबद्ध तरीके से कार्यारंभ किया। मुद्रा बनाने हेतु उसने सीसा, टिन (रांगा) और विसमथ धातुओं से उचित मिश्र-धातु बनाने का तरीका ढूंढ निकाला। सीसे का चयन सस्ता और स्याही के स्थानान्तरण करने की क्षमता के कारण किया गया। रांगा का (टिन) का उपयोग उसकी कठोरता एवं गलाने के गुणों से किया गया।

विसमथ धातु : इसकी विशेषता यह है कि यह ठंढ़ा होने पर फैलता है जिससे अन्य धातुओं के ठंढ़ा होने पर होने वाले संकुचन की भरपाई हो सके और परिमाण की सत्यता बनी रहे।

गुटेनवर्ग ने आवश्यकता के अनुसार मुद्रण स्याही भी बनायी तथा हैण्डप्रेस का प्रथम वार मुद्रण कार्य सम्पन्न करने में प्रयोग किया। इस हैण्डप्रेस में लकड़ी के चौखट में दो समतल भाग- प्लेट एवं बेड-एक के नीचे दूसरा समानान्तर रूप से रखे गए थे। कम्पोज किया हुआ टाइप मैटर बेड पर कस किया जाता था एवं उसपर स्याही लगाकर तथा कागज रखकर प्लेटस् द्वारा दबाकर मुद्रित किया जाता था। इस प्रकार का एक सुस्पष्ट, सस्ता एवं शीघ्र कार्यकरनेवाला गुटेनवर्ग का ऐतिहासिक मुद्रण शोध 1440 वें वर्ष में शुरू हुआ, जब गुटेन वर्ग को फस्ट नामक सुनार (साहुकार) से बाइबिल छापने का ठेका प्राप्त हुआ। ऐसा माना जाता है कि पुराने 42 लाइन एवं 36 लाइन के बाइबिल गुटेनवर्ग द्वारा छापे गए, हाँलाकि इनपर प्रकाशन की कोई तारीख अंकित नहीं है। 421 लाइन वाले बाइबिल का मुद्रण गुटेनवर्ग द्वारा शुरू किया गया लेकिन फस्ट और शुओफर द्वारा इसे पूर्ण किया गया क्योंकि दोनों ने गुटेनवर्ग के प्रेस को कोर्ट की डिक्री द्वारा अपने अधि कार में कर लिया था। इसके पश्चात गुटेनवर्ग ने पुनः मुद्र एवं हैण्ड प्रेस का विकास कर 36 लाइन में बाइविल को 1448 ई० में छापा । इसके बाद शुओफर ने 'इन्डलजन्स' नामक पुस्तक छापी।

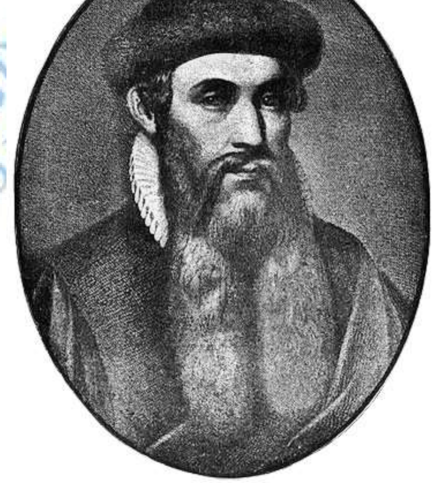

गुटेनवर्ग

हालाकि विवादों में घिरने के वावजूद मेंज मे शुरू होकर पूर्णता को पहुँची मुद्रण कला का प्रसार शीघ्रता से यूरोपिय देशों एवं अन्य स्थानों में हुआ। कौलग्ने, आग्सवर्ग, वेसल, रोम, वेनिस, एन्टवर्प, पेरिस आदि शहर मुद्रण के प्रमुख केन्द्र के रूप में विकसित हुए। यही शहर आगे

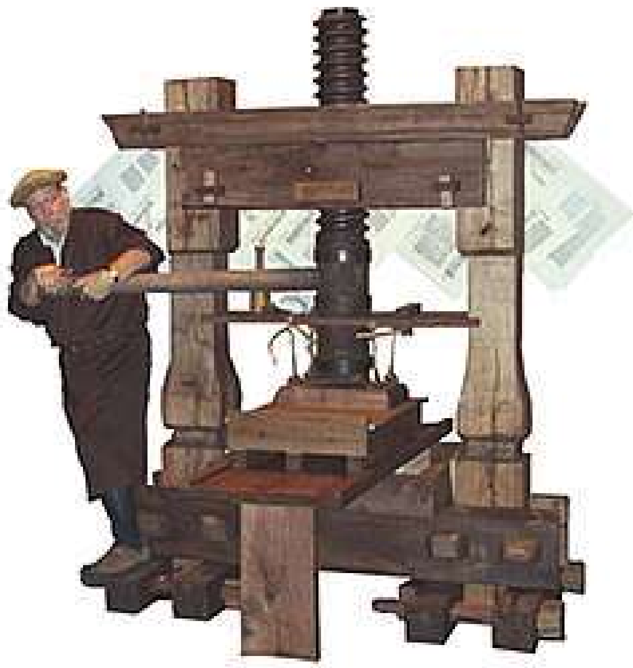

हैंडप्रेस

चलकर पुनर्जागरण एवं व्यापरिक क्रांति के केन्द्र के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए। 1475 ई० में सर विलियम कैक्सटन मुद्रणकला को इंगलैड में लाए तथा वेस्ट मिन्सटर कस्वे में उनका प्रथम प्रेस स्थापित हुआ। पुर्तगाल में इसकी शुरूआत 1544 ई० में हुई, तत्पश्चात यह आधुनिक रूप में विश्व के अन्य देशों में पहुँची।

मुद्रण क्रांति का बहुआयामी प्रभाव :

छापाखाने की संख्या में वृद्धि के परिणाम स्वरूप पुस्तक निर्माण में अप्रत्याशित वृद्धि हुई। 15 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक यूरोपीय बाजार में लगभग दो करोड़ मुद्रित किताबें आई; जिसकी संख्या 16वीं सदी तक 20 करोड़ हो गई। इस मुद्रण क्रांति ने आम लोगों की जिंदगी ही बदल दी। आम लोगों का जुड़ाव सूचना, ज्ञान, संस्था और सत्ता से नजदीकी स्तर पर हुआ। फलत: लोक चेतना एवं दृष्टि में बदलाव संभव हुआ।

मुद्रण क्रांति के फलस्वरूप किताबें समाज के सभी तबकों तक पहुँच गई। किताबों की पहुँच आसान होने से पढ़ने की नई संस्कृति विकसित हुई। एक नया पाठक वर्ग पैदा हुआ चूँकि, साक्षर ही पुस्तकों को पढ़ सकते थे अत: साक्षरता बढ़ाने हेतु पुस्तकों को रोचक तस्वीरों, लोकगीत

और लोक कथाओं से सजाया जाने लगा। पहले जो लोग सुनकर ज्ञानार्जन करते थे अब पढ़ कर भी कर सकते थे। पढ़ने से उनके अंदर तार्किक क्षमता का विकास हुआ।

पठन-पाठन से विचारों का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ तथा तर्कवाद और मानवतावाद का द्वार खुला। स्थापित विचारों से असहमत होनेवाले लोग भी अपने विचारों को फैला सकते थे। कुछ लोगों के मन में मुद्रित किताबों को लेकर तरह-तरह के भय व्याप्त थे कि पढ़ने के बाद आम लोगों के व्यक्तित्व में इसका क्या असर होगा । भय था कि लोगों मे बागी और अधार्मिक विचार पनपने लगेंगे और मूल्यवान साहित्य की सत्ता ही समाप्त हो जाएगी।

धर्म सुधारक मार्टिन लूथर ने रोमन कैथोलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना करते हुए अपनी पंचानवे (95) स्थापनाएँ लिखी। इसकी एक प्रति विटेनवर्ग गिरजाघर के दरवाजे पर टाँग दी गई। लूथर ने चर्च को इसके माध्यम से शास्त्रार्थ के लिए चुनौती भी दी। लूथर के लेख आम लोगों (स्वतंत्र विचारों के पोषक) में काफी लोकप्रिय हुए। कैथोलिक चर्च की सत्ता एवं उसके चरित्र पर लोगों द्वारा प्रश्नचिन्ह उठाए जाने लगे। फलस्वरूप चर्च में विभाजन हुआ और प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार आन्दोलन की शुरूआत हुई। लूथर द्वारा न्यूटेस्टामेंट के अनुवाद की हजारों प्रतियाँ हफ्ते भर में बिक गई और तीन महीनें के अन्दर दूसरा संस्करण निकालना पड़ा। प्रिंट के प्रति कृतज्ञ लूथर ने कहा- ''मुद्रण ईश्वर की दी हुई महानतम् देन है सबसे बड़ा तोहफा।'' इस तरह छपाई से नए बौद्धिक माहौल का निर्माण हुआ एवं धर्मसुधार आन्दोलन के नए विचारों का फैलाव बड़ी तेजी से आम लोगों तक हुआ।

अब अपेक्षाकृत कम पढ़े लिखे लोग धर्म की अलग-अलग व्याख्याओं से परिचित हुए। कृषक से लेकर बुद्धिजीवी तक बाइबिल की नई-नई व्याख्या करने लगे। ईश्वर एवं सृष्टि के बारे में रोमन कैथोलिक चर्च की मान्यताओं के विपरित विचार आने से कैथोलिक चर्च क्रुद्ध हो गया और तथाकथित धर्मविरोधी विचारों को दबाने के लिए इन्क्वीजीशन शुरू किया। जिसके माध्यम से विरोधी विचाराधारा के प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं पर प्रतिबंध लगाया गया।

अलग-अलग सम्प्रदाय के चर्चों ने देहाती क्षेत्रों में स्कूल स्थापित कर गरीब तबके के लोगों को शिक्षित करना शुरू किया। जिसके कारण साक्षरता 60 से 80 प्रतिशत तक हो गई। अब गाँव के गरीब भी सस्ती किताबों, चैपबुक्स, पंचांग, विन्लियोथिक ब्ल्यू एवं इतिहास आदि की किताबों को पढना शुरू किए। 18वीं सदी के आरंभ से पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से मनोरंजक खबरे

BSTBPC © NOT TO BE PUBLISHED

परोसी जाने लगी। इस तरह वैज्ञानिक और दार्शनिक बाते भी आम जनता की पहुँच से बाहर नही रही । न्यूटन, टामसपेन, वाल्तेयर और रूसो की पुस्तकें भारी मात्रा में छपने और पढी जाने लगी। फलतः विज्ञान, तर्क और विवेकवाद के विचार लोकप्रिय साहित्य में भी जगह पाने लगे।

18 वीं सदी के मध्यतक मुद्रण क्रांति के फलस्वरूप प्रगति और ज्ञानोदय का प्रकाश यूरोप में फैल चुका था। लोगों में निरंकुश सत्ता से लड़ने हेतु नैतिक साहस का संचार होने लगा था। फलस्वरूप मुद्रण संस्कृति ने फ्रांसीसी क्रांति के लिए भी अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण किया। क्रांतिकारी दार्शनिकों के लेखन ने परंपरा, अंधविश्वास और निरंकुशवाद की आलोचना पेश की। अब रीति –रिवाज की जगह विवेक और तर्क को कसौटी पर कसकर सत्य को परखा जाने लगा। चर्च की धार्मिक और राज्य की निरंकुश सता पर प्रहार किया जाने लगा। परंपरा पर आधारित सामाजिक व्यवस्था को दुर्बल किया गया। अब लोगों में आलोचनात्मक, सवालिया और तार्किक दृष्टिकोण विकसित होने लगा।

छपाई ने वाद –विवाद की नई संस्कृति को जन्म दिया। पुराने और परंपरागत मूल्यों, संस्थाओं और कायदों पर आम लोगों के बीच मूल्यांकन शुरू हो गया। धर्म और आस्था को तार्किकता की कसौटी पर कसने से मानवतावादी दृष्टिकोण विकसित होने लगे। इस तरह की नई सार्वजनिक दुनिया ने सामाजिक क्रांति को जन्म दिया। नए साहित्यों ने आमलोगों को निरंकुश राजशाही के प्रति आक्रोशित भी करने का प्रयास किया।

WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

तकनीकी विकास :

18 वी सदी के अंत तक प्रेस धातु के बनने लगे थे। 19 वी सदी के मध्य तक न्यूयार्क के रिचर्ड एम०हो० ने शक्ति चालित बेलनाकार प्रेस को कारगर बना लिया था। इससे प्रतिघंटे 8000 ताव छापे जा सकते थे। सदी के अंत तक ऑफसेट प्रेस आ गया था, जिससे छः रंगों में छपाई एक

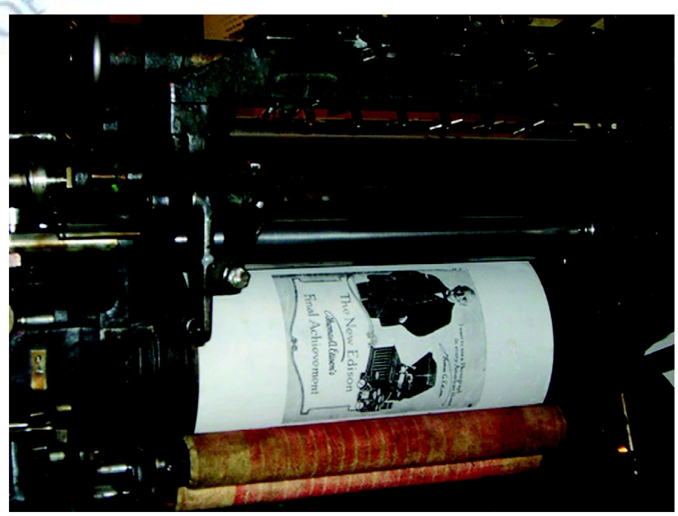

प्रिंटिंग प्रेस

साथ संभव थी। 20 वी सदी के प्रारंभ से बिजली से चलनेवाले छापेखाने ने तेजी से काम करना शुरू कर दिया। तकनीकी रूप से सुधार के चलते प्लेट की गुणवता बेहतर हुई। पेपर रील और रंगों के लिए फोटो विद्युतीय नियंत्रण भी काम में आने लगे। अब पुस्तकें सस्ती और रोचक कवर तथा पृष्ठ के साथ पाठकों के बीच पहुँचने लगी। इन पुस्तकों के पूर्व पाण्डुलिपियों के माध्यम से लोग ज्ञान अर्जन करते थे। यह आम छात्रों के लिए सुलभ नहीं थी क्योंकि यह काफी पुरानी, महँगी और दुर्लभ हुआ करती थी।

भारत में प्रेस का विकास :

भारत में छापाखाना के विकास के पहले हाथ से लिख कर पाण्डुलिपियों को तैयार करने की पुरानी एवं समृद्ध परम्परा थी। यहाँ संस्कृत, अरबी, एवं फारसी साहित्य की अनेकानेक तस्वीर युक्त सुलेखन कला से परिपूर्ण साहित्यों की रचनाएँ होती रहती थी। इन्हें मजबूती प्रदान करने के लिए सजिल्द भी किया जाता था। फिर भी पाण्डुलिपियाॅ काफी नाजुक और महॅगी होती थी। पाण्डुलिपियों की लिखावट कठिन होने एवं प्रचुरता से उपलब्ध नहीं होने के कारण यह आम जनता के पहुँच के बाहर थी। छापाखाना के आविष्कार ने भारत की भी तस्वीर बदल दी। प्रिटिंग प्रेस सबसे पहले भारत में पुर्तगाली धर्मप्रचारकों द्वारा 16 वीं सदी में लाया गया।

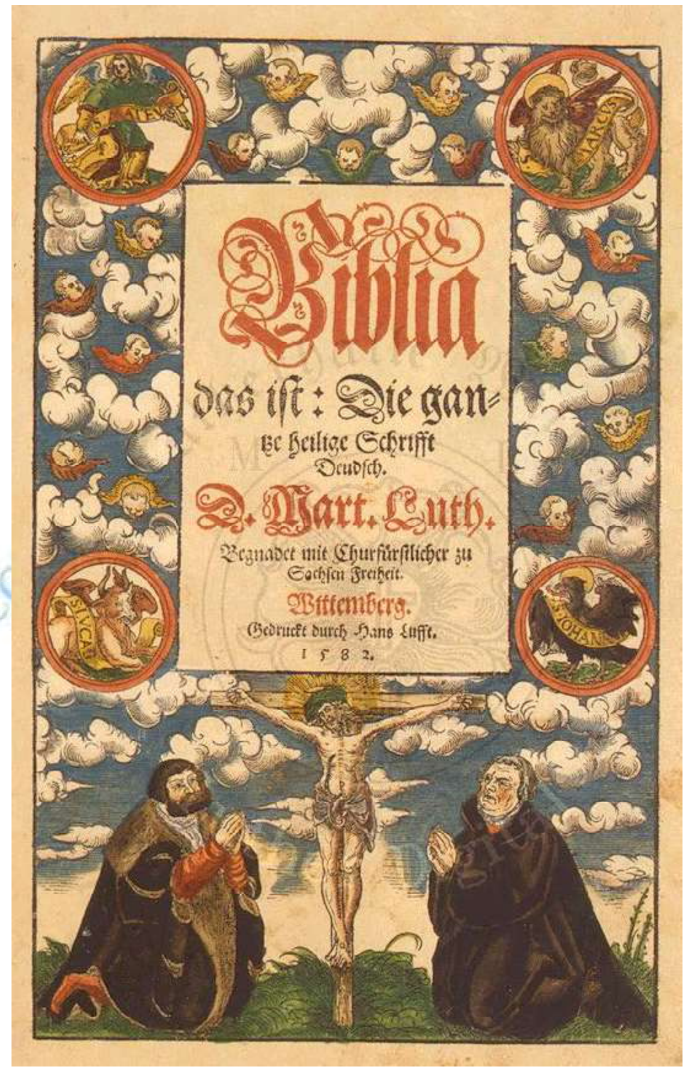

चित्रित पाण्डुलिपि

जेसुइट पुजारियों ने कोंकणी में कई पुस्तिकाए छापी। कैथोलिक पुजारियों ने 1579 में पहली तमिल पुस्तक छापी। डच –प्रोटेस्टेंटो ने कई किताबों को अनुदित करके भी छापा। भारत में समाचार–पत्रों का उदय 19 वी सदी की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। यह न सिर्फ विचारों को तेजी से फैलानेवाला अनिवार्य सामाजिक संस्था बन गया बल्कि ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध भारतीयों की भावना को एक, रूप देने, उसकी नीतियों एवं शोषण के विरूद्ध जागृति लाने एवं देशप्रेम की भावना जागृत कर राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया।

समाचार पत्रों की स्थापना :

अगस्टक हिकी

आधुनिक भारतीय प्रेस का प्रारंभ 1766 में विलियम बोल्टस द्वारा एक समाचार पत्र के प्रकाशन से हुआ । परन्तु ईस्ट इंडिया कंपनी ने उनके कार्यो से नाखुश होकर उन्हें इंगलैड भेज दिया । 1780 में जे० के० हिक्की ने **'बंगाल गजट'** नामक समाचार पत्र प्रकाशित करना आरंभ किया । हिक्की को भी कंपनी की आलोचना करने के अपराध में सजा भुगतनी पड़ी । हिक्की के प्रेस को कम्पनी ने जब्त कर लिया । नबम्वर 1780 में प्रकाशित **'इंडिया गजट'** दूसरा भारतीय पत्र था । 18 वीं सदी के अंत तक बंगाल में 'कलकत्ता कैरियर', 'एशियाटिक मिरर' तथा 'ओरियंटल स्टार', 'बंबई गजट' तथा 'हैराल्ड' और 'मद्रास कैरियर', 'मद्रास गजट' आदि समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे । ये सभी समाचार पत्र साप्ताहिक थे और अलग–अलग दिन प्रकाशित होते थे । इनकी विशेषता थी कि ये एक–दूसरे के प्रतिस्पर्धी न होकर पूरक थे । इनका क्षेत्र कम्पनी के अधिकारियों व्यापारियों तथा मिशनरियों तक ही सीमित था ।

भारतीयों द्वारा प्रकाशित प्रथम समाचारपत्र 1816 में गंगाघर भट्टाचार्य का साप्ताहिक 'बंगाल गजट' था । 1818 में ब्रिटिश व्यापारियों ने जैम्स सिल्क वर्किंधम नामक पत्रकार की सेवा प्राप्त की इसने बड़ी योग्यता से कलकत्ता जर्नल का सम्पादन करके लार्ड हेस्टिग्स तथा जॉन एडम्स को परेशानी तथा उलझन में डाल दिया । बर्किंधम ने अपने पत्रकारिता के माध्यम से प्रेस को जनता

Amrita Bazar Patrika

ARAB-JEWISH SABRE-RATTLING TO FINISH EACH OTHER

ISRAEL TO CONTINUE FIGHT IF SOVEREIGNTY NOT RECOGNISED

ABDULLAH THREATENS ANNIHILATION

'DELICATE STATE OF AFFAIRS' IN BERLIN

Attlee Summons Cabinet To Discuss Issue: Soviet Withhold Food Supply

NO DISCUSSION ON FRANCO SPAIN

Chiang's Forces Retake Kaifeng

U. N. KASHMIR COMMISSION'S COMMUNICATION TO INDIA

Prime Minister Nehru & Advisers In Foreign Office Studying Points

Dewey Gets Party Nomination

"MILL CLOTH AT FAIR PRICES"

'Sodepore'

SODEPORE COTTON MILLS LTD

NO FURTHER CLARIFICATION OF CHARGES ALLOWED

GANDHI MURDER TRIAL

Godse's Request To Separate Approver From Accused Granted

BENGAL MILLOWNERS' ASSOCIATION

अमृत बजार पत्रिका का मुख्यपृष्ठ

का प्रतिविम्व बनाया । इसने प्रेस को आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाने, जाँच-पड़ताल करके समाचार देने तथा नेतृत्व प्रदान करने की ओर प्रवृत किया । अपने प्रगतिशील कार्यो से ये कम्पनी की आँखों में खटकने लगे । फलत: उन्हें 1823 में इंगलैड भेज दिया गया ।

1821 में बंगाली में 'संवाद कौमुदी' तथा 1822 में फारसी में प्रकाशित 'मिरातुल' अखवार के साथ प्रगतिशील राष्ट्रीय प्रवृति के समाचार-पत्रों का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ । इन समाचार

पत्रों के संस्थापक राजा राम मोहन राय थे जिन्होंने इन्हें सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन का हथियार भी बनाया । अंग्रेजी में ब्राह्मिनिकल मैगजीन भी राममोहन राय ने निकाला । 1822 में बंबई से गुजराती भाषा में 'दैनिक बम्बई' समाचार निकलने लगे । द्वारकानाथ टैगोर, प्रसन्न कुमार टैगोर तथा राममोहन राय के प्रयास से 1830 में बंगदत की स्थापना हुई । 1831 में 'जामें जमशेद', 1851 साल में 'गोफ्तार' तथा 'अखबारे सौदागर' का प्रकाशन आरम्भ हुआ ।

राजा राममोहन राय

अंग्रेज प्राशासकों ने भारतीय समाचार-पत्रों द्वारा तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक समस्यायों पर विचार-विमर्श का स्वागत नहीं किया और प्रेस को प्रतिबंधित करने का कुत्सित प्रयास किया ।

प्रेस की विशेषताएँ–समयानुसार बदलते परिप्रेक्ष्य में :

19 वीं सदी के पूर्वार्द्ध में जागरूकता के अभाव के कारण सामान्य जनता से लेकर जमीदारों तक की रूचि राजनीति में नहीं थी फलत: समाचार-पत्रों का वितरण कम था । पत्रकारिता घाटे का व्यापार था । समाचार-पत्रों का जनमत पर कोई विशेष प्रभाव नहीं होने के कारण अंग्रेज प्रशासक भी परवाह नहीं करते थे । फिर भी समाचार-पत्रों द्वारा न्यायिक निर्णयों में पक्षपात, धार्मिक हस्तक्षेप और प्रजातीय भेदभाव की आलोचना करने से धार्मिक एवं सामाजिक सुधार-आन्दोलन को बल मिला तथा भारतीय जनमत जागृत हुआ ।

1857 के विद्रोह के पश्चात् समाचार-पत्रों की प्रकृति का विभाजन प्रजातीय आधार पर किया जा सकता है । भारत में दो प्रकार के प्रेस थे-एग्लोइंडियन प्रेस और भारतीय प्रेस । एंग्लोंडंडियन प्रेस की प्रकृति और आकार विदेशी था । यह भारतीयों में **'फूट डालों और शासन**

करों' का पक्षघर था । यह दो सम्प्रदायों के बीच एकता के प्रयास का घोर आलोचक था । इसके द्वारा भारतीय नेताओं पर 'राज' के प्रति गैर वफादारी का सदैव आरोप लगाया जाता रहा । एंग्लों इंडियन प्रेस को विशेषाधिकार प्राप्त था । सरकारी खबरे एवं विज्ञापन इसी को दिया जाता था । सरकार के साथ इसका घनिष्ठ संबंध था ।

भारतीय प्रेस अंगरेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होते थे । 19 वीं तथा 20 वीं सदी में राममोहन राय, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, बालगंगाघर तिलक, दादाभाई नौरोजी, जवाहर लाल नेहरू, महात्मा गाँधी, मुहम्मद अली, मौलाना आजाद आदि ने भारतीय प्रेस को शक्तिशाली तथा प्रभावकारी बनाया ।

19 वी सदी में अंग्रजों द्वारा सम्पादित कई समाचार पत्र थे । जिसमें टाइम्स ऑफ इंडिया 1861 में, स्टेट्समैन 1875 में, इग्लिशमैन कलकत्ता से, मद्रासमेल मद्रास से, पायनियर 1865 में इलाहाबाद से और 1876 में सिविल और मिलिट्री गजट लाहौर से प्रकाशित होने लगे थे । इगलिश मैन सबसे रूढ़िवादी और प्रतिक्रियावादी समाचारपत्र था, जबकि स्टेट्स मैन उदार विचारों का पोषक था । यह सरकार और कांग्रेस दोनों की आलोचना करता था । पायनियर सरकार का समर्थक और भारतीयों का आलोचक था ।

WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

भारतीयों द्वारा प्रकाशित एवं संपादित पत्र :

1858 में ईश्वरचन्द विद्यासागर ने 'सोम प्रकाश' का प्रकाशन साप्ताहिक के रूप में बंगाली में प्रारम्भ किया । यह राष्ट्रवादी विचारों से ओतप्रोत समाचार पत्र था । इसने नीलहे किसानों के हितों का जोरदार समर्थन किया । लार्ड लिटन ने इसकी गतिविधियों के कारण ही वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट लागू किया था । कुछ वर्षो वाद 'हिन्दू पैट्रियट' को भी विद्यासागर ने ले लिया । 1874-75 के बीच इस पत्र के लंदन में संवाददाता सुरेन्द्रनाथ टैगोर और मनमोहन घोष ने 'इंडियन मिरर' का प्रकाशन शुरू किया । यह उत्तरी भारत का भारतीयों द्वारा संपादित एक मात्र दैनिक समाचार पत्र था । केशवचन्द्र सेन ने 'सुलभ समाचार' का बंगला में दैनिक प्रकाशन किया ।

ईश्वरचन्द विद्यासागर

मोतीलाल घोष के संपादन में 1868 से अग्रेजी-बंगला साप्ताहिक के रूप में अमृत बाजार पत्रिका का प्रेस के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है । 1878 में लिटन के वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट से बचने के लिए यह रातो-रात अंगरेजी में प्रकाशित होने लगा ।

जोगेन्द्र नाथ बोस के सम्पादन (1881) में बंगवासी शुरू हुआ जिसकी वितरण संख्या 8500 तक पहुँच गई । सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने बंगाली को राष्ट्रवादी एवं राजनीतिक विचारधारा का प्रभावशाली पत्र बनाने में सफलता प्राप्त की । कलकत्ता से हिन्दी बंगवासी, आर्यावर्त, उचितवक्ता, भारत मित्र आदि का प्रकाशन शुरू हुआ । कालाकांकड (उत्तर प्रदेश) से हिन्दी में हिन्दोस्तान का प्रकाशन शुरू हुआ, जो उदार विचारों का पोषक था ।

भारतेन्दु हरिश्चंद का हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है । 1867 में इनके संपादन में वनारस से 'कविवचन सुधा' प्रकाशित होने लगा । इसकी संपादकीय टिप्पणियाँ राजनीति-सामाजिक विषयों पर होती थी जो राष्ट्रवादी विचारों को सशक्त करने का काम कर रही थी । भारतेन्दु की 1872 में प्रकाशित मासिक पत्रिका हरिश्चंद्र भी देश प्रेम और समाज सुधार से अनुप्राणित थी । राष्ट्रवादी विचारों को संपोषित करने वाली पत्रिकाओं में बालकृष्ण भट्ट का हिन्दी प्रदीप रामकृष्ण वर्मा के 'भारत जीवन' का महत्वपूर्ण स्थान है। 1899 में अगरेजी मासिक 'हिन्दुस्तान रिव्यू' की स्थापना सच्चिदानंद सिन्हा ने की, जिसका दृष्कोण राजनीतिक था ।

धीरे-धीरे 19 वीं सदी के अंतिम दो दशकों में राष्ट्रीय आन्दोलन का फलक विस्तृत हो रहा था । फलत: राष्ट्रीय आन्दोलन की नई लहर एवं कांग्रेस की स्थापना ने प्रेस के विकास एवं समाचार पत्रों के प्रसार पर व्यापक प्रभाव डाले। बाल गंगाघर तिलक के संपादन में 1881 में बंबई से अंग्रेजी भाषा में मराठा और मराठी में केसरी की शुरूआत हुई । दोनों पत्र उग्रराष्ट्रवादी विचारों से प्रभावित थे । इनका जनमानस पर व्यापक प्रभाव था । 1862 में एम० जी० रणाडे ने इन्दु प्रकाश तथा फिरोजशाह मेहता ने 1913 में बाम्बे कॉनिकल का प्रकाश प्रारंभ किया ।

बंगाल में उग्रराष्ट्रवाद को फैलाने का काम अरविद घोष और वारींद्र घोष ने जुगांतर तथा बंदेमातरम् के माध्यम से किया ।

मद्रास से 1878 में साप्ताहिक के रूप में प्रकाशित होनेवाला हिन्दू 1881 में दैनिक के रूप में परिवर्तित हो गए । इस पत्र का दृष्टिकोण उदार था ।

WEBCOPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

समाचार पत्रों को राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रचार के हथियार के रूप में डा० एनीवेसेन्ट ने भी इस्तेमाल किया । इन्होंने मद्रास स्टैंडर्ड को अपने संचालन में लेकर न्यू इंडिया का नाम देकर होमरूल का नारा जन-जन तक पहुँचाया ।

महात्मा गाँधी न केवल कुशल राजनीतिज्ञ ही थे बल्कि महान् पत्रकार भी थे । गाँधी जी ने 'यंग इंडिया' तथा 'हरिजन' के माध्यम से अपने विचारों एवं राष्ट्रवादी आन्दोलन का प्रचार किया । सरकार को अपने राजनैतिक दर्शन एवं राजनीतिक कार्यक्रमों से अवगत कराया तथा भारत के आवाम् को एक बड़े आन्दोलन के लिए प्रशिक्षित किया । भारतीय प्रेस गाँधी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर निर्भिक होने लगा । गाँधी के सीधे एवं सरल लेख से आम जनता के साथ-साथ क्षेत्रीय पत्रकारिता को भी राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ने के लिए प्रोत्साहन मिला ।

समाचार पत्रों ने न केवल राष्ट्रवादी आन्दोलन को एवं नई दिशा दी अपितु भारत में शिक्षा के प्रोत्साहन, आर्थिक विकास एवं औद्योगिकरण तथा श्रम आन्दोलन को भी प्रोत्साहित करने का कार्य किया ।

मोतीलाल नेहरू ने १९१९ में इडिपेंडेंस, शिव प्रसाद गुप्त ने हिन्दी दैनिक आज, के0 एम0 पन्निकर ने १९२२ में हिन्दुस्तान टाइम्स का सम्पादन प्रारंभ किया । बाद में हिन्दुस्तान टाइम्स का सम्पादन कार्य मदनमोहन मालवीय के हाथ में आया और अतत: 1927 में इस पत्र को जी० डी० विडला ने अपने हाथों में ले लिया। समाजवादी-साम्यवादी विचारो के फैलाव के परिणामस्वरूप मराठी साप्ताहिक क्रांति, वर्कस एण्ड पीजेंट्स पार्टी ऑफ इंडिया का प्रतिनिधित्व कर रहा था । अंग्रेजी साप्ताहिक न्यू स्पार्क, कांग्रेस सोशलिस्ट क्रमश: मार्क्सवादी

INSURANCE

The Bombay Chronicle

INSURANCE

VOL. XVIII NO. 83

MAHATMA BREAKS SALT LAW.

His Son And Lieutenants Arrested.

MAHARASHTRA VOLUNTEERS BEGIN CAMPAIGN AT JUHU.

GANDHIJI'S APPEAL FOR NATION-WIDE MASS CIVIL DISOBEDIENCE

Rigorous Social Boycott Of Officials In Dandi

BONFIRE OF FOREIGN CLOTHES AT JUHU

GANDHI'S SON ARRESTED

MAHATMA'S MESSAGE TO AMERICAN PEOPLE

Mere Sympathy Not Enough

SUPPORT INDIAN INDEPENDENCE

Non-Violence, India's Message To The World

MAHARASHTRA VOLUNTEERS BREAK SALT LAWS

तत्कालीन समाचार पत्र में गाँधी जी

WEB COPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

एवं समाजवादी विचारों के पोषक थे । एम० एन० राय ने अंग्रेजी साप्ताहिक **इंडिपेंडेन्ट** 1930 में, एस० सदानंद के संपादन में दी फ्री प्रेस जरनल को शुरू किया गया। मद्रास में स्वराज्य तथा गुजराती में नवजीवन का प्रकाशन भी शुरू हुआ ।

1910–20 के बीच उर्दू पत्रकारिता का भी विकास हुआ । मौलाना आजाद के संपादन में 1912 में 'अल हिलाल' तथा 1913 में 'अल बिलाग' कलकत्ता से निकलना प्रारंभ हुआ । मोहम्मद अली ने अगरेजी में 'कामरेड' तथा उर्दू में 'हमदर्द' का प्रकाशन किया । 1910 में गणेश शंकर विधार्थी के संपादन में 'प्रताप' का प्रकाशन कानपुर से प्रारंभ हुआ । यह उग्र राष्ट्रवाद तथा किसान–मजदूर का जवरदस्त समर्थक था । 1913 में 'गदर' का प्रकाशन हरदयाल के द्वारा सैन फ्रांसिस्को से हुआ । यह धर्मनिरपेक्ष और लोकतंत्रिक भावनाओं से ओतप्रोत समाचार–पत्र था । जनवरी 1914 से पंजावी में भी इसका प्रकाशन प्रारंभ हुआ । विदेशों में रह रहे भारतीयों के मन में देशप्रेम का भाव जगाने हेतु यह पत्र काफी सक्रिय रहा ।

जहाँ तक उर्दू प्रेस का राष्ट्रवादी आन्दोलन से संबंध की बात है 1857 की क्रांति के दौरान एवं इसके पश्चात यह अंग्रेजी राज की घोर आलोचक थी । लेकिन राष्ट्रीय राजनीति में सर सैयद अहमद खाँ के बढ़ते प्रभाव ने इसे कांग्रेस समर्थित राष्ट्रीय आन्दोलन एवं अंग्रेजी राज से मुसलमानों के संबंधों की नई व्यवख्या करने के लिए प्रेरित किया । हालाकि उर्दू प्रेस ने सामान्य रूप से सर सैयद अहमद के विचारों से सहमति प्रकट नहीं की । मौलाना आजाद, मोहम्मद अली और अब्दुल वारी साहेब आदि के संपादन में प्रकाशित होने वाले पत्र पूर्णतः राष्ट्रवादी भावनाओं से ओत प्रोत थे। इनमें से कई पत्रों के ग्राहक सर सैयद के अलीगढ़ जर्नल से कही अधिक थे।

प्रेस का राष्ट्रीय आन्दोलन में भूमिका तथा प्रभाव

प्रेस ने राष्ट्रीय आन्दोलन के हर पक्ष–चाहे वह राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक हो या सांस्कृतिक–सबको प्रेस ने प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया । प्रेस के माध्यम से राष्ट्रीय नेताओं ने अंग्रेजी राज की शोषणकारी नीतियों का पर्दाफाश करते हुए जनजागरण फैलाने का कार्य किया । विदेशी सत्ता से त्रस्त जनता को सन्मार्ग दिखाने एवं साम्राज्यवाद के विरोध में निर्भिक स्वर उठाने का कार्य प्रेस के माध्यम से ही किया गया ।

©BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की स्थापना से पहले समाचार-पत्र देश में लोकमत का प्रतिनिधित्व कर रहे थे । देशभक्तों ने लाभ या व्यवसायिक दृष्टि से पत्रकारिता को नहीं अपनाया, बल्कि इसे मिशन के रूप में अपनाया । समाचार-पत्रों ने राजनीतिक शिक्षा देने का दायित्व अपने उपर ले लिया । अधिकांश समाचार-पत्रों का रूख कांग्रेस की याचना वादी नीतियों से भिन्न थी। राजनीतिक समस्याओं में भाग लेने के लिए समाचार पत्र जनता को प्रोत्साहित करते थे । पूरे वर्ष समाचार पत्रों में कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों में पारित प्रस्तावों की चर्चा होती रहती थी । इससे राष्ट्रीय चेतना का प्रचार द्रुत गति से होने लगा । अंग्रेजों द्वारा पक्षपात की नीति की आलोचना भारतेन्दु ने इन शब्दों में की, ''क्या कारण है कि हिन्दू मजिस्ट्रेट अंग्रेज को दण्ड न दे सके पर अंग्रेज हिन्दू को? केवल पक्षपात!

नई शिक्षा नीति के प्रति व्यापक असंतोष को सरकार के समक्ष पहुँचाने का कार्य प्रेस ने ही किया । अंग्रेजों द्वारा भारत का जो आर्थिक शोषण हो रहा था इसके विरूद्ध भी प्रेस ने आवाज उठाई । आर्थिक दुर्दशा का मार्मिक चित्रण करते हुए एक पत्र ने लिखा, कि, ''वाणिज्य, व्यापार, टिकस पर टिकस और मोटा वेतन ग्रहण करके राजपुरूषगण यहाँ से सब रूपया विदेश ले गए हैं। यहाँ इतना रूपया नहीं है कि देश सामान्य कार्यो का खर्च संभाल सके । पर इंगलैड के राजमंत्री भारत के गवर्नर जनरल से पाँच गुणा वेतन लेते है .... परन्तु भारत वर्ष कामधेनु तो नहीं है, यह अब अंग्रजों को जान लेना होगा ।'' 'भारत मित्र' ने भारत से चावल निर्यात का विरोध किया । भारत की शोचनीय आर्थिक दशा पर समाचार पत्र के विचारो में मतभेद था । भारतीय समाचार पत्र इस दुर्दशा के लिए अंग्रेजो की शेषणकारी नीति को उत्तरदायी मानते थे जबकि एंग्लो इंडियन प्रेस भारत को इस दुर्दशा से निकालने में अंग्रेजी राज को ही सक्षम मानते थे । अधिकांश समाचार पत्रों की नजर में भारत की वास्तविक समस्या राजनीति से कहीं अधिक आर्थिक थी । समाचार पत्रों द्वारा भारत से धन के निष्कासन को रोकने का आहवान किया गया । गर्मियों में राजधानी शिमला स्थानान्तरित करने की भी आलोचना समाचार पत्रों ने की। स्वदेशी का भी समर्थन इनके द्वारा किया गया । जैसा अखबार ने लिखा कि स्वदेशी हिन्दूओं से अधिक मुसलमानों के लिए फायदेमंद होगा ।

सामाजिक सुधार के क्षेत्र में, प्रेस ने सामाजिक रूढ़ियों, रीति रिवाजों, अंधविश्वास तथा अंग्रेजी सभ्यता के प्रभाव को लेकर लगातार आलोचनात्मक लेख प्रकाशित किए । राम मोहन राय, विद्यासागर, केशवचन्द्र सेन आदि जैसे समाजसुधारकों ने जनमत हेतु प्रेस को अपना हथियार बनाया ।

भारतीय नरेशों के प्रति सम्पादकों ने सदैव सकारात्मक रूख अपनाया। जब भी सर्वोच्च सत्ता द्वारा इनके अधिकारों का अतिक्रमण किया जाता था, प्रेस उसकी आलोचना करते थे । प्रेस नरेशों के नैतिक उत्थान तथा प्रजा के प्रति उनके कर्त्तव्यों के बारे में उन्हें जागरूक भी करता था। कूच बिहार, पटियाला, रामपुर के शासकों द्वारा प्रजा हित की अवहेलना कर मनोरंजन और व्यसन में संलिप्त रहने पर समाचार पत्रों ने कड़ी आलोचना की। कुछ समाचार पत्र ने अपव्यय के कारण लार्ड कर्जन के उन कदमों का स्वागत किया जिसके द्वारा नरेशों पर विदेश जाने के बारे में प्रतिबंध लगाया था ।

प्रेस भारत की विदेश नीति की भी खूब समीक्षा करती थी । वर्मा युद्ध, सिक्किम तथा तिब्बत के प्रति नीति, अफगनिस्तान युद्ध, तुर्की के प्रति नीति, दक्षिण अफ्रीका की घटनाओं (बोअर युद्ध) रूस-जापान युद्ध का वर्णन तथा सरकार की नीति की आलोचना प्रेस ने खुलेआम की । प्रेस ने ग्लैडस्टन की वर्मा संबंधी नीतियों की आलोचना करते हुए स्पष्ट किया कि युद्ध इंगलैड के साम्राज्यवादी हितों की रक्षा के लिए लडा गया था न कि भारतीयों की सुरक्षा के लिए ।

दक्षिण अफ्रीका में गाँधी के प्रयासों का भारतीय प्रेस में उल्लेख किया गया । शुरू में अंग्रजों के विरूद्ध बोअर विजय से भी भारतीय प्रेस खुश थे। रूस-जापान युद्ध (1904-5) में रूस की पराजय को समाचार पत्रों ने आत्मविश्वास और राष्ट्रवाद बढ़ाने के अवसर के रूप में देखा। रूस का मध्य एशिया में बढ़ते प्रभाव के कारण अंग्रेज काफी सहमे हुए थे । ऐसी स्थिति में रूसी प्रशासन की भारतीय प्रेस द्वारा प्रशंसा कर अंग्रेजों पर दवाव बनाने का प्रयास किया जा रहा था ।

तुर्की के प्रति भारतीय मुसलमानों की भावनाओं को सरकार एवं जनता के समक्ष रखने में प्रेस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी । हालाकि सर सैयद अहमद खाँ सहित कुछ लोगों के विचार भिन्न थे । अरमानिया एवं वाल्कन (1912) मुद्दे पर पर मुस्लिम प्रेस जमीन्दार, अलहिलाल, तौहीद, हमदर्द, कामरेड आदि ने अपनी शक्ति का पूरा प्रयोग करते हुए संपूर्ण देश में अंगरेजों के विरूद्ध राष्ट्रीय भावना जागृत कर दी ।

देश के राष्ट्रीय आन्दोलन को नई दिशा देने एवं राष्ट्रनिर्माण में भी प्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका रही । प्रेस ने सरकार की नीतियों की समीक्षा तथा जनमत का निर्माण कर लोकतांत्रिक तरीके से उसके विरोध का मार्ग प्रशस्त किया। सम्पूर्ण देश के लोगों के बीच सामाजिक कुरीतियों को दूर करने, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक एकता स्थापित करने का कार्य भी किया गया। विदेशी

WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

राजनीतिक घटनाओं से स्वतंत्रता आन्दोलन को अनुप्रमाणित करने का कार्य भी प्रेस ने किया। लिटन द्वारा वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट के माध्यम से समाचार पत्रों पर प्रतिवंध ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन एवं जनमानस को उद्वेलित किया। लार्ड कर्जन द्वारा बंगाल के विभाजन ने तो भारतीय प्रेस एवं राष्ट्रीय आन्दोलन, दोनों को नया जीवन प्रदान किया।

इस काल में हिन्दू-मुस्लिम दोनों प्रेस ने इसाइयों के विरूद्ध हिन्दूओं और मुसलमानों के बीच एकता लाने का प्रयास किया। निजाम-उल-मुल्क तथा अखबारे आम ने इसाई सरकार के विरूद्ध एक संगठित जनमत बनाने का आह्वान किया। मुस्लिम प्रेस ने साम्प्रदायिक दंगों के प्रति भी तार्किक दृष्टिकोण अपनाया तथा सरकार द्वारा उकसानेवाली नीतियों को बिना सोचे-समझे स्वीकार नहीं किया। प्रेस ने गंगा-जमुनी संस्कृति का पक्ष लेते हुए साम्प्रदायिक एकता बनाये रखने में भी प्रशंसनीय भूमिका निभाई।

कांग्रेस में वैचारिक मतभेद के फलस्वरूप सूरत फूट (1907) के पश्चात नरम दल के नेताओं ने अपने विचारों को जनता तक पहुँचाने के लिए प्रेस का सहारा लिया। दूसरी तरफ बाल-लाल-पाल के नेतृत्व में अतिवादी राष्ट्रवाद के विचारों को भी फैलाने का कार्य प्रेस ने किया दोनों पक्ष के महत्वपूर्ण राष्ट्रीय नेता कई समाचार पत्रों के संस्थापक तथा संपादक भी थे। फिरोजशाह मेहता, तिलक, ऐनी वेसेंट, गांधी सरीखे महान नेता संपादकीय के द्वारा समाचार पत्रों के माध्यम से राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए जनमत जुटाने का प्रयास किया। भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों ने आम जनता से भावनात्मक संबंध स्थापित कर राष्ट्रीय आन्दोलन के पक्ष में उन्हें तैयार किया। इस प्रकार भारतीय प्रेस ने राष्ट्रीयता के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसने संपूर्ण भारत को एकता के सूत्र में बांधने, विभिन्न समुदायों की बीच की दूरी समाप्त करने एवं शोषण के विरूद्ध जनमत तैयार करने का कार्य कर राष्ट्रीय आन्दोलन एवं राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को तीव्र किया।

प्रेस के विरूद्ध प्रतिबंध :

भारत में समाचार पत्रों के प्रकाशन के साथ ही सरकारी नीतियों की समीक्षा भी शुरू हो गई थी। प्रारम्भ में कंपनी शासन के दौरान समाचार पत्रों के लिए आदर्श आचार संहिता नहीं थी। कंपनी की स्वेच्छा पर निर्भर था कि समाचार पत्र या संपादक के प्रति वह अपने अनुकूल कार्य न करने पर कौन सा दण्ड निर्धारित करे। इन परिस्थितियों में समाचार पत्र कम्पनी की दया पर निर्भर थे। कम्पनी कभी भी पूर्व पर्वेक्षण की नीति के कारण मनोकुल नहीं रहने पर संपादक को

वापस इंगलैण्ड भेज देती थी। लेकिन वह भारतीय संपादकों के साथ ऐसा नहीं कर सकती थी। अत: समाचार पत्रों को नियंत्रित करने के लिए कई अधिनियम बनाए गए।

(१) १७९९ का समाचार पत्रों का पर्त्रेक्षण अधिनियम : लार्ड वेल्जली ने फ्रांस के आक्रमण के भय से समाचार पत्रों पर सेन्सर बैठा दिया। इस अधिनियम के अनुसार समाचार पत्र को संपादक, मुद्रक एवं स्वामी का नाम स्पष्ट रूप से छापना पड़ता था। प्रकाशक को प्रकाशित किए जानेवाले सभी तत्त्वों को सरकार के सचिव के सम्मुख पूर्व-पत्रेक्षण के लिए भेजना होता था। 1807 में इस अधिनियम को पत्रिकाओं, पॅम्फलेट तथा पुस्तकों पर भी लागू कर दिया गया। हेस्टिंग्स के समय कुछ ढील दी गई और 1818 तक पूर्व पत्रेक्षण बन्द कर दिया गया।

(२) १८२३ के अनुज्ञप्ति नियम (The Licencing Regulation of 1823) : 1823 में जान एडम्स गवर्नर जनरल बनते ही अपने प्रतिक्रियावादी विचारों को इस अधिनियम में व्यक्त किया। इसके अनुसार–मुद्रणालय स्थापित करने के लिए अनुज्ञप्ति लेनी आवश्यक थी। बिना अनुज्ञप्ति 400 रूपये का दण्ड अथवा कारावास की सजा का प्रावधान था। दण्ड नायक बिना अनुमति मुद्रणालय जब्त कर सकता था। गवर्नर जनरल को अनुज्ञप्ति रद्द करने का भी अधिकार था। इस नियम के आलोक में राजा राम मोहन राय के मिरात-उल-अखबार को बन्द होना पड़ा तथा जे० एस० वर्किंघम को इंगलैण्ड में उद्वासित होना पड़ा।

(३) भारतीय समाचार पत्रों की स्वतंत्रता १८३५ (The Liberation of Indian Press) : विलियम वेंटिक समाचार पत्रों के प्रति उदार था लेकिन 1823 के नियम को रद्द कर चार्ल्स मेटकाफ भारतीय समाचार पत्रों के 'मुक्ति दाता' के रूप में विभूषित हुआ। मैकाले का विचार था कि आपातकाल में सरकार के पास अनन्त शक्ति है तो शांतिकाल में ऐसे नियमों की कोई आवश्यकता नहीं है। नए अधिनियम के तहत प्रकाशक प्रकाशन स्थान की सूचना देकर सुगमता से कार्य कर सकता था। 1856 तक यह कानून चलता रहा फलत: देश में समाचार पत्रों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई।

(४) १८५७ का अनुज्ञप्ति अधिनियम (Licencing Act fo 1857) : 1857 के अधिनियम के अनुसार अनुज्ञप्ति को पुन: लागू कर दिया गया। यह सिर्फ एकवर्ष के लिए संकटकालीन व्यवस्था के रूप में लागू किया गया था।

(५) १८६७ का पंजीकरण अधिनियम (Registration Act of 1867) : इस अधि नियम के तहत मेटकाफ के अधिनियम को परिवर्तित किया गया। जिसका उद्देश्य मुद्रणालयों को

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

नियमित करना था। प्रत्येक पुस्तक तथा समाचार पत्र पर मुद्रक, प्रकाशक तथा मुद्रण स्थान का नाम होना आवश्यक था। इसके अतिरिक्त एक महीने के भीतर प्रकाशक को पुस्तक की एक प्रति सरकार को देनी भी थी। बहावी विद्रोह के कारण राजद्रोह फैलानेवाले को अंशकालिक अथवा पूर्णकालिक सजा का भी प्रावधान किया गया।

(६) देशी भाषा समाचार-पत्र अधिनियम वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट १८७८ : 1857 के पश्चात समाचार-पत्र भी शासक और शासित के बीच में बँट गए। अंग्रेजी समाचार पत्र सरकार का सदैव समर्थन करते थे। लेकिन देशी समाचार पत्रों ने मुखर होकर साम्राज्यवादी नीतियों के विरूद्ध राष्ट्रवादी भावना को उत्पन्न किया। अकाल और सरकारी अपव्यय की खबरों ने जनता के बीच भारी असंतोष को उत्पन्न किया। लिटन यह समझता था कि इस असंतोष का कारण 'मैकाले और मेटकाफ' की नीतियाँ हैं। फलतः इसने 1878 के देशी भाषा समाचार-पत्र अधि नियम के माध्यम से समाचार पत्रों को अधिक नियंत्रण में लाने का प्रयत्न किया। इस अधि नियम के माध्यम से जिला दण्डनायक (Bond) बंधनपत्र एवं जमानत पर किसी समाचार पत्र को प्रकाशित करने की आज्ञा इस शर्त पर दे कि वे ताज (Crown) के विरूद्ध भडकाने वाले कोई समाचार नहीं छापेंगे। इसमें दण्ड नायक का निर्णय अंतिम होगा। अगर कोई समाचार पत्र इस अधिनियम से बचना चाहे तो अपने पत्र की इक्ष्य प्रति (Proof) सरकारी प्रर्वेक्षण को पहले से देनी होगी।

लार्ड लिटन

यह अधिनियम देशी भाषा समाचार पत्रों के लिए मुँह बन्द करने वाला एवं भेदभाव पूर्ण साबित हुआ। यह भारतीय समाचार पत्रों की भाषा और भाव को नियंत्रित करने में सफल रहा। नए भारत सचिव लार्ड क्रेनवुक ने प्रर्वेक्षण की धारा को सितम्बर 1878 में हटा दिया। इसके बदले प्रेस आयुक्त को नियुक्त किया गया जिसका कार्य सच्चे और यथार्थ समाचार पत्र प्रेषित करना था।

लार्ड रिपन जो सच्चा उदारवादी शासक था ने इस अधिनियम को रद्द कर दिया। लेकिन 1898 के अधिनियम के द्वारा व्यवस्था की गई कि वैसे कथन जो सेना में असंतोष फैलाए तथा राज्य के विरूद्ध कार्य करने की प्रेरणा दे, को दण्डित किया जा सके। वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट ने राष्ट्रीयता की भावना एवं जन असंतोष में उबाल ही लाने का कार्य किया।

(७) १९०८ का समाचार पत्र अधिनियम (The News Paper Act 1908) : लार्ड कर्जन की नीतियों के विरूद्ध उग्रराष्ट्रवाद की भावनाएँ भडक रही थी। इन्हें दबाने के लिए 1908 का News Paper Act पास किया गया। इसके अनुसार किसी समाचार पत्र की ऐसी सामग्री जिससे हिंसा अथवा हत्या की प्रेरणा मिले, उसकी संपति को सरकार जब्त कर सकती थी। स्थानीय सरकार पंजीकरण अधिनियम 1867 के तहत किसी प्रकाशक की घोषणा को रद्द कर सकती थी। प्रकाशकों को मुद्रणालय जब्त होने के 15 दिन के भीतर उच्च न्यायालय में अपील करने की अनुमति थी।

(८) १९१० का भारतीय समाचार पत्र अधिनियम (The Indian Press Act 1910) : इस अधिनियम ने लार्ड लिटन के 1878 के एक्ट के सभी घिनौने लक्षण को पुनर्जीवित कर दिया। सरकार के जमानत जब्त करने तथा पंजीकरण रद्द करने का अधिकार था। पुनः आपत्तिजनक सामग्री प्रकाशित करने पर मुद्राणालय और पुस्तक की सभी प्रतियों को जब्त करने का अधिकार मिल गया। प्रथम विश्वयुद्ध के दिनों में भारत सुरक्षा नियम के अन्तर्गत राजनैतिक आन्दोलन तथा स्वतंत्र जन आलोचना की आज्ञा नहीं थी। 1921 में तेज बहादुर सप्रु की अध्यक्षता वाली प्रेस कमिटि की सिफारिश पर 1908 और 1910 के अधिनियम को रद्द कर दिया गया।

(९) १९३१ का भारतीय समाचार पत्र (संकटकालीन शक्तियाँ) अधिनियम : इसके अनुसार 1910 के सारे आदेश पुनः लागू कर दिए गए। इस अधिनियम द्वारा प्रत्यक्ष–परोक्ष किसी रूप से अपराध की प्रेरणा देने पर कड़ा दण्ड का प्रावधान किया गया। 1932 में प्रभुसत्ता को हानि पहुँचानेवाली सभी गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए यह अधिनियम लाया गया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान पूर्व पत्रेक्षण को पुनः लागू किया गया। एक समय राष्ट्रीय कांग्रेस के विषय में समाचार प्रकाशित करना भी अवैध घोषित किया गया। इन सभी शक्तियों को 1945 में समाप्त कर दी गई।

WEB COPY © BSTBPC NOT TO REPUBLISHED

(१०) समाचार पत्र जाँच समिति (Press Examination Committee) : मार्च 1947 में गठित यह समिति संविधान सभा में स्पष्ट किए गए मौलिक अधिकारों के आलोक में सिफारिश की कि 1931 के समाचार पत्र अधिनियम, देशी राज्य अधिनियम (असंतोष के विरूद्ध एकता), 1934 के देशी राज्य रक्षा अधिनियम को रद्द किया जाए।

(११) १९५१ का समाचार पत्र (आपत्तिजनक विषय) अधिनियम (The Press objectionable Matters Act 1951) : 1951 में सरकार को संविधान के अनुच्छेद 19 (2) में संशोधन और समाचार पत्र अधिनियम पारित करने की आवश्यकता पड़ी। इसके माध्यम से अब तक के सभी अधिनियमों को रद्द कर दिया गया। नए कानून के माध्यम से सरकार मुद्रणालय को आपत्तिजनक विषय प्रकाशित करने पर जब्त कर सकती थी। प्रकाशकों को जूरी द्वारा परीक्षा मांगने का अधिकार दे दिया गया। यह अधिनियम 1956 तक लागू रहा।

कई पत्रकार संगठनों द्वारा इसका विरोध करने पर सरकार ने न्यायाधीश जी०एस० राजाध्यक्ष की अध्यक्षता में एक प्रेस कमीशन नियुक्त किया। इसने 1954 में अखिल भारतीय समाचार पत्र परिषद् के गठन सहित कई सुझाव दिए जो सरकार द्वार मान लिए गए।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में प्रेस की भूमिका : वैश्विक स्तर पर मुद्रण अपने आदिकाल से भारत में स्वाधीनता आन्दोलन तक भिन्न-भिन्न परिस्थितियों से गुजरते हुए आज अपनी उपादेयता (महत्व या उपयोगिता) के कारण ऐसी स्थिति में पहुँच गया है कि इससे ज्ञान जगत् की हर गतिविधियाँ प्रभावित हो रही है। आज पत्रकारिता साहित्य, मनोरंजन, ज्ञान-विज्ञान प्रशासन, राजनीति आदि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रहा है।

आज के इस आधुनिक दौर में प्रेस, साहित्य और समाज की समृद्ध चेतना की धरोहर है और पत्र-पत्रिकाएँ दैनिक गतिशीलता की लेखा है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में पत्र-पत्रिकाओं का उद्देश्य भले ही व्यावसायिक रहा हो किन्तु इसने साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अभिरूचि जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। पत्र-पत्रिकाओं ने दिन-प्रतिदिन घटनेवाली घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में नई और सहज शब्दावली का प्रयोग करते हुए भाषाशास्त्र के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रेस ने समाज में नवचेतना पैदा कर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं दैनिक जीवन में क्रांति का सूत्रपात किया। प्रेस ने सदैव सामाजिक बुराइयों दहेज प्रथा, विधवा विवाह, बालिका-बध, बाल-विवाह जैसे मुद्दों को उठाकर समाज के कुप्रथाओं को दूर करने में मदद की तथा व्याप्त अंध विश्वास को दूर करने का प्रयास किया।

WEBCOPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

आज के परिवर्तनकारी युग में प्रेस स्वस्थ-मनोविनोद का भी स्रोत बन गया है। आज की भाग-दौड़ एवं तनावपूर्ण जीवन शैली में भी प्रेस सिनेमा से लेकर खेलकूद से संबधित समाचार को प्रमुखता से छापकर पाठकों का मनोरंजन करती है। प्रेस पारस्परिक गपशप, हास-परिहास, व्यंग-विनोद, प्रश्नोत्तर, फूलझड़ी, कहकहें से लेकर काँव-काँव के माध्यम से समाज को सूक्ष्म संदेश तो देती ही है, मनोरंजन भी करती है।

आज प्रेस समाज में रचनात्मकता का प्रतीक भी बनता जा रहा है। यह समाज को नित्यप्रति की उपलब्धियों, वैज्ञानिक अनुसंधानों वैज्ञानिक उपकरणों एवं साधनों से परिचित कराता है। पत्रकार, विज्ञान के वरदान और अभिशाप को घटनाओं के माध्यम से समाज के सामने लाते है। ताकि सामान्य लोग भी विश्व कल्याण के संदर्भ में सोच सके।

आज प्रेस लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करने हेतु सजग प्रहरी के रूप में हमारे सामने खड़ा है। यह वर्तमान राजनीति को सकारात्मक दिशा प्रदान करने के साथ-साथ भ्रष्टतंत्र पर करार प्रहार करने का भी प्रयास करता है।

इस तरह हम देखते हैं कि प्रेस अपने विकास के प्रथम चरण से आज भिन्न-भिन्न परिस्थितियों से गुजरते हुए समस्त परम्पराओं एवं मूल्यों की रक्षक तथा वर्तमान सामाजिक, वैज्ञानिक एवं राजनीतिक गतिविधियों को समझने एवं जानने के मुख्य श्रोत के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

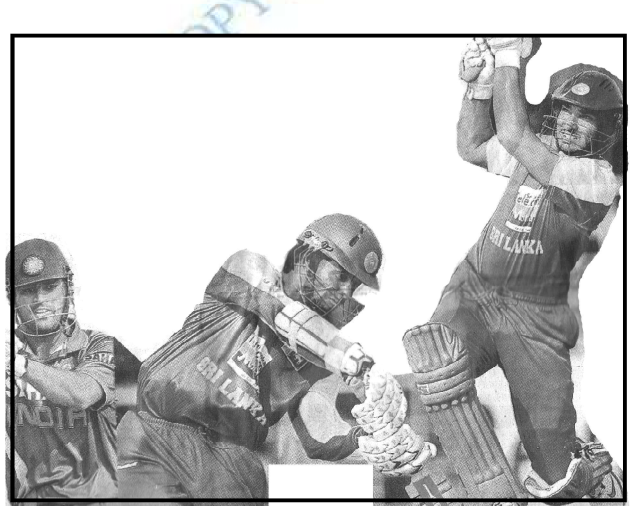

क्रिकेट खेलते हुए भारतीय टीम

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. महात्मा गाँधी ने किस पत्र का संपादन किया ?

   (क) कामनवील (ख) यंग इंडिया

   (ग) बंगाली (घ) बिहारी

2. किस पत्र ने रातो-रात वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट से बचने के लिए अपनी भाषा बदल दी ?

   (क) हरिजन (ख) भारत मित्र

   (ग) अमृतबाजर पत्रिका (घ) हिन्दुस्तान रिव्यू

3. 13वीं सदी में किसने ब्लाक प्रिंटिंग के नमूने यूरोप में पहुँचाए ?

   (क) मार्कोपोलो (ख) निकितिन

   (ग) इत्सिंग (घ) मेगास्थनीज

4. गुटेनवर्ग का जन्म किस देश में हुआ था?

   (क) अमेरिका (ख) जर्मनी

   (ग) जापान (घ) इंगलैंड

5. गुटेनवर्ग ने सर्वप्रथम किस पुस्तक की छपाई की?

   (क) कुरान (ख) गीता

   (ग) हदीस (घ) बाइबिल

6. इंगलैंड में मुद्रणकला को पहुँचाने वाला कौन था ?

   (क) हैमिल्टन (ख) कैक्सटन

   (ग) एडिसन (घ) स्मिथ

7. किसने कहा ''मुद्रण ईश्वर की दी हुई महानतम् देन है, सबसे बड़ा तोहफा'?

   (क) महात्मा गांधी (ख) मार्टिन लूथर

   (ग) मुहम्मद पैगम्बर (घ) ईसा मसीह

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

8. रूसो कहाँ का दार्शनिक था ?

(क) फ्रांस (ख) रूस

(ग) अमेरिका (घ) इंगलैंड

9. विश्व में सर्वप्रथम मुद्रण की शुरूआत कहाँ हुई?

(क) भारत (ख) जापान

(ग) चीन (घ) अमेरिका

10. किस देश की सिविल सेवा परीक्षा ने मुद्रित पुस्तकों (सामग्रियों) की माँग बढ़ाई?

(क) मिश्र (ख) भारत

(ग) चीन (घ) जापान

रिक्त स्थानों को भरें :

1. 1904-05 के रूस-जापन युद्ध में .... की पराजय हुई।
2. फिरोज शाह मेहता ने .... का संपादन किया।
3. वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट .... ई० में पास किया गया।
4. भारतीय समाचार पत्रों के मुक्तिदाता के रूप में .... को विभूषित किया गया।
5. अल-हिलाल का सम्पादन .... ने किया।

© BSTBPC
WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

सुमेलित करें :

1.	जे० के० हिक्की	(क)	संवाद कौमुदी
2.	राम मोहन राय	(ख)	बंगाली
3.	बाल गंगाधर तिलक	(ग)	बंगाल गजट
4.	केशवचन्द्र सेन	(घ)	मराठा
5.	सुरेन्द्र नाथ बनर्जी	(ङ)	सुलभ समाचार

१. **निम्नांकित के बारे में २० शब्दों में लिखों :**

(क) छापाखाना
(ख) गुटेनवर्ग
(ग) बाइबिल
(घ) रेशम मार्ग
(ङ) मराठा
(च) यंग इंडिया
(छ) वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट
(ज) सर सैयद अहमद
(झ) प्रोटेस्टेन्ट वाद
(ञ) माटिन लूथर

२. **निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर ६० शब्दों में दें :**

(क) गुटेन वर्ग ने मुद्रणयंत्र का विकास कैसे किया ?
(ख) छापाखाना यूरोप में कैसे पहुँचा ?
(ग) इन्क्वीजीशन से आप क्या समझते है। इसकी जरूरत क्यों पड़ी ?
(घ) पाण्डुलिपि क्या है ? इसकी क्या उपयोगिता है ?
(ङ) लार्ड लिटन ने राष्ट्रीय आन्दोलन को गतिमान बनाया। कैसे ?

३. **दीर्घ उत्तरीय प्रश्न १५० शब्दों में उत्तर :**

(क) मुद्रण क्रांति ने आधुनिक विश्व को कैसे प्रभावित किया ?
(ख) 19वीं सदी में भारत में प्रेस के विकास को रेखांकित करें।
(ग) भारतीय प्रेस की विशेषताओं को लिखें।
(घ) राष्ट्रीय आन्दोलन को भारतीय प्रेस ने कैसे प्रभावित किया?
(ङ) मुद्रण यंत्र की विकास यात्रा को रेखांकित करें। यह आधुनिक स्वरूप में कैसे पहुँचा?

वर्ग परिचर्चा :

1. छपाई की तकनीक को समझने के लिए अपने शिक्षक के साथ नजदीकी प्रेस का भ्रमण करें।
2. आधुनिक समाचार पत्रों के साथ पूववर्ती समाचार पत्रों का तुलनात्मक अध्ययन अपने वर्ग शिक्षक से करें।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED